कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि॥

!! श्री श्याम देवाय नमः!!

सभ तैं पहल्यां, उस पणमेस्सर का मन मैं कर ल्यूँ ध्यान रै,
गुरु चरणां मै शीश धरूं, ध्याऊं मात-पिता गैल भगवान रै,
ठारा अध्यायी गीता मै तै, करूं उँहके सार का बखान रै,
श्री किरसन नै अरजन ताहीं, जुधभूमि मैं दिया था ग्यान रै,
पढ कै गीता, जो समझ्या लिखूं हरियाणवी मैं गुणगान रै,
कर दियो गलती माफ, पुतला गलतियां का, होसै इंसान रै।

पं. श्रीनारायण कौशिक
शिक्षा अनुदेशक, जिला झज्जर
हरको फेड, पंचकुला

रण भूमि मैं जिब देक्खे, दोनूँ कान्हीं, लड़णियां के ओड़,
खड़े, आह्मी साह्मी, म्हारे कुणबे अर हिमात्तियाँ के जोड़,
जै अपण्यां नैं मारूंगा, तै राज मिलैगा, सौ बाताँ के तोड़,
कुणबा घाणी करवाण तैं आच्छ्या, द्यां लड़ाईयां नैं छोड़,
किरसन! जुध कर्याँ तै, फादया के, तोड़ां आपस मैं पोड़,
दुबड़ध्याँ मैं, धरती पै बैठग्या, वो अरजन गाण्डीव नै छोड़।

01

रै अरजन ! ऊठ तिरा बैठणा अर सोचणा बेकार सै,
असल मैं, सभ निराकार, साह्मी तेरै वोहे साकार सै,
आत्मा, अजर, अमर, धख्ये इंह शरीर मैं असवार सै,
देह बदल कै, या तै घूम्यां करै, यो सासवत संसार सै,
काल्ह थे, आज सां, काल्ह हौवांगे, काळ मैं सुमार सैं,
जुध भूमि मैं, आकै जुध कर, ना तै जीवणा बेकार सै।

इन्द्रियाँ कै काब्बू माणस, करमां की राह तैं भटकै सै,
काम, क्रोध, मद, लोभ अर मोह मैं, फँस कै अटकै सै,
अपणी गरज मैं माणस खामखाँ, आड़ै आकै खटकै सै,
यो काळ इक दिन धरमी अधरमी दोनुआँ नैं गटकै सै,
जो जण्म्या वो मरै जरूर, तू क्यूँ ? मारण तै मटकै सै,
आच्छे करम करणिया माणस, कदे नै कदे तै चटकै सै।

03

क्यब जनमे, क्यब मरे, इंहका ना कोए लेखा जोखा सै,
मरण आला जीणा चाहवै, आड़ै योहे तै देख्या धोखा सै,
योग साधना तैं, पावै नै ताकत, थ्याया बढिया मौका सै,
राग, भय, क्रोध के बिन जीवै, ऊंहका जीवणा चौखा सै,
मरकै, जी तै जी मैं मिलज्यां, धखे शरीर एक खोखा सै,
रै अरजन! उठ कै लड़ ले, मनै दीक्खै फळ अनोखा सै।

बिना लाग लपेट, करम करणा, दक्खे साचा धन होसै,
राग, द्वेस, ईरसा, मोह ना राखै, माणस सज्जन होसै,
सत करमाँ तैं करै वै काम, भगवान कै समरपण होसै,
जिब माया ढकल्ये ग्यान नै, फेर माणस मूरखजन होसै,
जो इन्द्रियाँ नै राखले काबू मै, ऊंहका प्यारा तन होसै,
आच्छे करमां का, फल देवणिया तै, आपै भगवन होसै।

05

रै अरजन ! योग करणा ए, इन सारे भोगाँ नै मारण सै,
भीतर ले नै सुद्ध जो राखै माणस, वाहे साधना धारण सै,
सुख–दुःख ज्यब कदे पड़ज्यां, तै सिरफ योग तारण सै,
बैराग धारणा ए बावळे, फेर आगले जन्माँ तै निवारण सै,
दुनिया मैं, आवणा जावणा, उस पणमेस्सर कै कारण सै,
धरमजुध मैं, धरम खातर, आपै यू किरसन तेरा तारण सै।

रै अरजन! तनै समझाऊं, किमै कर उरै नै ख्यास,
जीणा, मरणा, जस, अपजस, सकति अर बिस्वास,
योग, साधना, गंध, आग, जप, तप अर यू परकास,
जड़ चेतन, धरम–अधरम, कर्म उत्पति अर बिनास,
त्याग, तपस्या, परकरति, नीति, सास्तर अर अकास,
सत, रज, तम, इन तीनुआँ नैं, राखै सै अपणै पास।

रै अरजन! मैं ए, बिसणु का अवतार साकार सूं,
माणस चाहवै रूप जिसा, मैं उसा ए आकार सूं,
परमाक्षर, सच्चिदानंद, ब्रह्म स्वरूप का आधार सूं,
शुक्लपक्ष कृष्णपक्ष मैं, जीवां मैं आँवतें बिचार सूं,
तूँ क्यूँ राक्खै भड़क, तिरे रथ पै खुद असवार सूं,
धरती पै पैदा सभ जीवाँ का, मैं ए पालन हार सूं।

रै अरजन! अन्न मैं सूं, औषधि मैं सूं, हवन मैं सूं, गगन मैं सूं, ब्याधी मैं सूं, भवन मैं सूं, पवन मैं सूं, ऋग्वेद, यजुर्वेद, साम अर अथर्व वेद जतन मैं सूं, मंत्र मैं सूं, धन मैं सू, वनस्पति मैं सूं, अगन मैं सूं, सत मैं सूं, असत मैं सू, धरम–अधरम यतन मैं सूं, उत्पत्ति अर परलय मैं सूं, आधार अर निधान मैं सूं।

हे केशव ! देवकी वासुदेव नन्दन, मोहन मुरारी, चरणां मै शीश झुकाऊं, जगत पालक, गिरधारी, दिव्य, अलौकिक, सृष्टि कारक, विष्णु अवतारी, सरण आये के, दुख भय भंजक, सभ सुखकारी, धरमजुध मैं गवाह, हे दयावान, भगवन न्याकारी, दिव्यरूप दरसन तांहीं, ईब आया सरण तुम्हारी।

रै अरजन! चिंता छोड़,देख माया रूप गैल मेरा,
भूत लोक मैं, सभ उत्पत्ति–बिनास का खेल मेरा,
देव–दानव, चर–अचर, आवागमन का मेल मेरा,
पैदा हो वो मरै जरूर, सत परकरति का सेल मेरा,
शंख, चक्र, गदा, पदम, कंठी माला का मेल मेरा,
जै अधरमियाँ नैं, तू ना मारै, तै तलैगा तेल मेरा।

रै अरजन ! इन्द्रियाँ नैं, जो काबू मैं, राख जावै सै,
एकड़वासी रहकै, ध्यान मग्न हो, नित मन्नै ध्यावै सै,
सभ करमाँ नैं करां पाच्छै वो, सिरफ मेरै ए नाम बतावै सै,
हरदम कर कै भजन, मुझमैं मन अर बुद्धि लगावै सै,
मरम छोड़, अभ्यास तैं ग्यान नै, आच्छा बतलावै सै,
द्वेस, सोक अर हरस नै, त्यागणियाँ ए, मन्नै भावै सै।

पांचूं भूताँ, दसूं इन्द्रियाँ, छहूं विकाराँ का खेल्ला सै,
परकरति अर पुरूस दोनुआँ का, करतब झमेल्ला सै,
काम कै पाच्छै कारण होवै, जग तै उड़न खटोल्ला सै,
बेगुणी आतमा लिपै कोन्या, मन माया तै ए मैल्ला सै,
सूरज की ज्यूं चमकदार, म्हारी आतमा अनमोल्ला सै,
रै अरजन! कर कै करम भूल जावै, वोहे मेरा चेल्ला सै।

13

रै अरजन! तीन गुणाँ की खान, सारी दुनिया होसै,
सतोगुण सदा निरमल, परकासवान अर दूधिया होसै,
रजोगुण तैं, काम अर आसक्ति धारकै, अंधिया होसै,
तमोगुण अग्यान तैं उपजै, ग्यान नै धारणिया होसै,
सत–सुख, रज–करम, तम–अग्यान, फेरणिया होसै,
माणस मन, इन्ह तीनुआँ मैं, कितै फँसकै मरणिया होसै।

रै अरजन! जीवात्मा, सत्य सनातन परकरती सै,
छल, कपट, बैर भाव, राग अर द्वेस बिकरती सै,
त्याग, तपस्या, समर्पण, श्रद्धा, सभ संस्करती सै,
आत्मा सो परमात्मा, मोह माया त्याग नीवरती सै,
इच्छा रूपी आसक्ति, जग मैं माणस परवरती सै,
एकसा मानकै, सत्संग करणा, साध्वां की बिरती सै।

जन्म जात होवै सैं दो प्रवृति, एक दैवी, दूसरी आसुरी,
दैवी प्रवृत्ति, मन अर करम तैं, कसट देण नैं मानै बुरी,
करै दया, धरम, तप, दान, बचनाँ की बातां नैं करै पूरी,
चोरी–जारी, छल–कपट अर दुसमनी तैं बना राखैं दूरी,
दम्भ, घमण्ड, द्‌वेस, छोह, अग्यान तैं होवैं सैं आसुरी,
रै अरजन! आसुरी का नास करै नै, पना कै ग्यान छुरी।

रै अरजन ! जीवात्मा लिकड़्यां पाच्छै, छूटज्यां व्यवहार,
सात्विक माणस, यज्ञ, तप, दान करण मैं राखै एतबार,
राजस पुरूस राखै सारे यक्षाँ अर राक्षसाँ आळे संस्कार,
तामस पुरूस, भूताँ अर परेत्ताँ के, हमेसा करैं सै व्यापार,
ऊं, तत सत, इन्ह तीनुआं के तांहीं, ब्रह्म रचै सै संसार,
सत रूपी नां मैं बैठण्ये का, पणमेस्सर बणै सै तारणहार।

17

हे किरसन! गीता उपदेश तैं, इब दूर हुया अग्यान मेरा,
मोह, माया, ममता नै आण कै, था पकड़ राख्या मन मेरा,
धर्मजुध मैं, धरम रकसा खात्तर, इब बहा दयूँ खून भतेरा,
अधरमियां नैं जड़ तैं खोद्यूं, लगा कै यो धरमध्वज फेरा,
सभ किमै मिलग्या मन्नै, ईब जो सिर पै हाथ पड़्य़ा तेरा,
गीता ग्यान सुण पढ कै, श्रीनारायण देखै नित नया सबेरा।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

श्रीकृष्ण वंदना

हे ! श्रीविष्णु देहधारी, षोडशकला अवतारी,
श्रीकृष्ण मुरारी, शंख, चक्र, पद्मधारी,
गोवर्धन पर्वत धारक, मोहन मुरली मुरारी,
देवकी वासुदेव नंदन, यशोदा मनोहारी,
बाल सखा सुदामा, भ्राता बलराम हलधारी,
राधा रूकमणि के हृदयराज, मुकुटधारी,
गीता ज्ञान उपदेशक, महाभारत न्यायकारी,
श्रीनारायण करता, वंदन हे पीताम्बरधारी !

पं. श्रीनारायण कौशिक
वरिष्ठ लेखाकार
दी झज्जर केन्द्रीय सहकारी बैंक लि., झज्जर
मो. : 9812255805, 8607155805
Youtube : dada nehla, pota dehla